थे।

9. वैदिक संस्कृति के खिलाफ उठी आवाज अर्थात उपनिषदवेत्ताओं की आवाज :—

(i) ब्राह्मणों के प्रमुख तथा आर्यों के कट्टर कर्मकाण्डों पर प्रबल प्रहार हुआ। यह प्रक्रिया पंचालों एवं विदेह के राज्य में विशेष रूप से हुई। यहाँ 600BC के आस-पास उपनिषदों का संकलन हुआ।

(ii) उपनिषदों के चिन्ह ऋग्वेद के उन अंशों में ढूंढे जा सकते हैं यहाँ "ब्रह्मद्विष" अर्थात वेदों से घृणा करने वालों का ~~उल्लेख~~ उल्लेख है।

तथा वेदों की आराधना करने वालों को स्वार्थी पुरोहित के रूप में वर्णित किया गया है

* ब्राह्मण धर्म – अर्थात् वैदिक धर्म पर प्रथम प्रहार 600 BC के आस-पास ब्राह्मणों ब्राह्मणों द्वारा ही किया गया था।

(iii) उपनिषदीय विचारकों ने यज्ञ आदि अनुष्ठानों को ऐसी कमजोर नौका बताया है जिसके द्वारा भवसागर पार नहीं किया जा सकता। उन्होंने इस उद्देश्य से जीवन के चक्र आदि से मोक्ष दिलाने के लिया ज्ञान-मार्ग का प्रतिपादन किया। यह ज्ञान मार्ग था। ब्राह्मण एवं आत्मा के बीच अभेद भाव का अनुभव करना

* उपनिषद् के तप पर विशेष बल दिया गया है।

(iv) उपनिषदों में यज्ञ के बदले आत्मा से सम्बन्धित विचारों पर अधिक प्रकाश डाला गया। उपनिषदों में आत्मा की परिवर्तन हीनता एवं अमरत्व पर जोड़ दिया है सृष्टि के बारे में कहा गया है कि विश्वात्मा की मूल कामना से उसकी उत्पत्ती हुई है उपनिषद में पहली बार जीव से जीव की उत्पत्ति और मानव आत्मा का विकास का विचार को साफ-साफ व्यक्त किया गया है यह कहा गया है कि मनुष्य अपने पूर्व जन्मों के अनुसार सुख और दुख भोगता है। इस प्रकार कर्म का सिद्धान्त उपनिषद् में दिया इसमें मनुष्य ने दुख को अपने कर्म का फल मान लिया है और यह शिक्षा बहुत अंशों में भारतीय चिंतन धारा का मूल आधार हो गयी।

उत्तर वैदिक काल के कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। प्रदेशास्त्रीत्र राज्यों की शुरू आत हुई युद्ध केवल पशुओं को हथियाने के लिए नही बल्कि राज्य क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए भी होने लगे कौरवों और पांडवों के बीच हुआ प्रख्यात्र महाभारत युद्ध इसी काल की स्थिति का प्रतिबिम्ब माना जा सकता है। आरम्भिक वैदिक काल का प्रधान पशुचारण समाज अब किसान बन गये और बार-बार राजस्व या नजराना दे-देकर अपने राज्य का भरण पोषण करके असमर्थ हो गये राजा कबायली किसान के बुते पर समृध होते गये और उन पुरोहितों को प्रचुर दान दक्षिणा देते गये जो योग्य कारि अर्थात आम जनता के विरुध हमेशा अपने दाता का पक्ष लेते थे। शुद्र उ0 काल मे छोटा सेवक वर्ग बना रहा। कबायली समाज टुटकर वर्णो मे विभक्त हुआ समाज बन गया किन्तु वर्ण मुलक भेद भाव पर अत्याधिक बल नही किया जा सका। ब्राह्मणो किस इतिहास के वावयुध राजन्य या क्षत्रिय राज्य तंत्र की स्थापना नही करपाये थे। तब तक कोई राज्य कैसे चल सकता है जबत कोई नियमित करप्रणाली न हो और वेतन भोगी सेना न हो सेना करो के भरोसे ही रखी जा सकती थी परन्तु खेती के प्रचलित तरीके मे प्रर्याप्त कर और राजस्व उगाने की कोई गुन्जाईस अधिक नही थी

———————— X ————————